

किमान

59

११

दिगन्त तट पर, युद्धस्थल में,
वर्णाश्रित गति का पाकर,
अन्तिम वाणी से पल पल में
भिन्न शोणित से लिखवाकर,
ह भागत ! मरने के पल्ले,
ह वग जिज्ञास सेलि
जिन्हे जाना है, बट क
आम-वर्णि हो शिर मेंनि !

मोहित निराला